Journal of Advances in Developmental Research (IJAIDR)
E-ISSN: 0976-4844 ● Website: www.ijaidr.com ● Email: editor@ijaidr.com

पक्षियों के संरक्षण की चुनौतियाँः केवलादेव घना पक्षी विहार के सन्दर्भ में पर्यावरणीय अध्ययन

उदय सिंह

सहायक आचार्य
भूगोल
एस. आर. एस. पी. जी. महिला महाविद्यालय, कुम्हेर भरतपुर

सारांशः
प्रस्तुत शोध पत्र केवलादेव धना पक्षी विहार (भरतपुर, राजस्थान) के परिप्रेक्ष्य में पक्षियों के संरक्षण से संबंधित पर्यावरणीय चुनौतियों का विश्लेषण करता है। यह राष्ट्रीय उद्यान न केवल प्रवासी पक्षियों का महत्त्वपूर्ण आश्रय स्थल है, बल्कि स्थानीय जैव–विविधता का भी प्रमुख केंद्र है। बढते शहरीकरण, जलस्रोतों की कमी, पर्यटन का दबाव, जलवायु परिवर्तन एवं मानवीय हस्तक्षेप ने यहाँ की पारिस्थितिकी पर गंभीर प्रभाव डाला है। इस अध्ययन में रिमोट सेसिंग, क्षेत्रीय सर्वेक्षण और उपलब्ध साहित्य के आधार पर यह स्पष्ट हुआ कि पक्षियों के आवास क्षेत्रों में हो रहे परिवर्तनों से प्रवासी और स्थानीय प्रजातियों की संख्या में कमी आ रही है। साथ ही, जल प्रबंधन की असंतुलित नीतियाँ और अवैज्ञानिक भूमि उपयोग पक्षियों की पारिस्थितिक आवश्यकताओं को बाधित कर रहे हैं। अध्ययन यह इंगित करता है कि केवलादेव घना पक्षी विहार में पक्षियों के संरक्षण हेतु समन्वित प्रयासों की आवश्यकता है, जिसमें समुदाय की सहभागिता, वैज्ञानिक जल प्रबंधन, नियंत्रित पर्यटन, तथा आधुनिक संरक्षण तकनीकों का समावेश किया जाए। यह शोध न केवल पक्षियों के दीर्घकालिक संरक्षण के लिए उपयोगी होगा बल्कि पर्यावरणीय नीतियों एवं सतत विकास की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण योगदान देगा।

परिचय

जैव विविधता किसी भी पारिस्थितिकी तंत्र की आधारशिला होती है. और उसमें पक्षियों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। पक्षी न केवल पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने में सहायक होते हैं, बल्कि परागण, बीज प्रसार और कीट नियंत्रण जैसी पारिस्थितिकीय सेवाओं के माध्यम से मानव जीवन और कृषि प्रणाली को भी प्रभावित करते हैं। परंतु तीव्र शहरीकरण, औद्योगिकीकरण, जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक आवासों के क्षरण ने वैश्विक स्तर पर पक्षियों की अनेक प्रजातियों को संकटग्रस्त बना दिया है।

केवलादेव घना पक्षी विहार भरतपुर शहर से 2 किलोमीटर दक्षिण पश्चिम में एन एच 21 जयपुर आगरा मार्ग पर स्थित है 2873 हेक्टेयर भूमि में फैला हुआ है जो आगरा से 50 किलोमीटर और दिल्ली से 180 किलोमीटर दूर स्थित है। यह एक विश्व प्रसिद्ध प्रवासी पक्षियों का स्वर्ग, एशिया महाद्वीप की सबसे बडी प्रवासी पक्षियों की शरणास्थली आदि नाम से जाना जाता है स्थानीय रूप में अभी भी इसे घाना के नाम से जाना जाता है जिसका अर्थ होता है घना जंगल इस पार्क के केंद्र में भगवान शिव का मंदिर उपस्थित होने कारण इसे केवलादेव के नाम से जाना जाता है। साइबेरिया से लगभग 5000 किलोमीटर की दूरी तय करके साइबेरियन सारस दिसंबर जनवरी माह में प्रजनन हेतु प्रतिवर्ष यहां आते हैं इसके अतिरिक्त 370 से अधिक पक्षियों व जानवरों की प्रजातियों का घर है यह भारत का एकमात्र 2 मीटर ऊंची पक्की चारदीवारी वाला राष्ट्रीय उद्यान है।

घना को 1981 में रामसर साइट में शामिल किया गया एवं 1982 में इस राष्ट्रीय उद्यान एवं 1985 में यूनेस्को की प्राकृतिक धरोहर की सूची में शामिल किया गया है वर्तमान में यह सौर ऊर्जा द्वारा संचालित राष्ट्रीय उद्यान है।

जल संकट

इसके लिए पानी की आपूर्ति अजान बांध एवं धौलपुर से चंबल के पानी को पाइपलाइन द्वारा पहुंचाकर वर्तमान में घाना के लिए पानी की आपूर्ति की जा रही है।

हालांकि, पिछले कुछ दशकों में केवलादेव घना पक्षी विहार अनेक पर्यावरणीय चुनौतियों का सामना कर रहा है। जल संसाधनों की कमी, मानसूनी अनिश्चितता, आसपास के क्षेत्रों में कृषि विस्तार, पर्यटन दबाव, तथा मानवीय हस्तक्षेप इसके प्राकृतिक पारिस्थितिक तंत्र को प्रभावित कर रहे हैं। इन कारणों से पक्षियों की संख्या और प्रजातीय विविधता में धीरे–धीरे गिरावट देखी जा रही है।

अतः इस शोध का उद्देश्य केवलादेव घना पक्षी विहार में पक्षियों के संरक्षण से संबंधित चुनौतियों का पर्यावरणीय दृष्टिकोण से अध्ययन करना है, ताकि इनके समाधान हेतु उपयुक्त रणनीतियाँ और नीतिगत सुझाव प्रस्तुत किएजा सकें। यह अध्ययन न केवल पक्षी संरक्षण की दिशा में योगदान देगा बल्कि पर्यावरणीय स्तर और पारिस्थितिकीय संतुलन बनाए रखने में भी सहायक सिद्ध होगा।

साहित्य समीक्षा

सिंह (1995) ने अपने अध्ययन में निष्कर्ष निकाला कि केवलादेव घना पक्षी विहार में जल प्रबंधन की स्थिति पक्षियों की उपस्थिति और उनकी प्रजनन क्षमता पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालती है। जल की कमी के कारण प्रवासी पक्षियों की संख्या में कमी दर्ज की गई।

रहमानी (2002) ने भारत में प्रवासी पक्षियों की स्थिति पर अपने शोध में उल्लेख किया कि वैश्विक स्तर पर तापमान वृद्धि और आर्द्रभूमि क्षेत्रों में कमी प्रवासी प्रजातियों के लिए सबसे बडी चुनौती है।

विश्व प्रकृति निधि (2005) की रिपोर्ट में कहा गया कि मानवजनित दबाव जैसे अवैध शिकार, पर्यटन गतिविधियों में वृद्धि और भूमि उपयोग परिवर्तन पक्षी संरक्षण के लिए गंभीर खतरे बनते जा रहे हैं।

कुमार एवं भटनागर (2010) के अनुसार, केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान में पर्यटन और मानवीय हस्तक्षेप से स्थानीय पारिस्थितिकी में असंतुलन उत्पन्न हो रहा है, जिससे पक्षियों के प्राकृतिक आवास प्रभावित हो रहे हैं।

शर्मा (2015) के अध्ययन ने यह निष्कर्ष निकाला कि राजस्थान की आर्द्रभूमियों धीरे–धीरे सिकुड रही है, और इसके परिणामस्वरूप प्रवासी पक्षियों का आगमन लगातार घट रहा है।

आई यू सी एन (2019) की रिपोर्ट के अनुसार, विश्वभर में लगभग 14 प्रतिशत पक्षी प्रजातियाँ संकटग्रस्त श्रेणी में है और इसका मुख्य कारण जलवायु परिवर्तन तथा प्राकृतिक आवासों का हास है।

शोध के उद्देश्य

1. केवलादेव घना पक्षी विहार में पाई जाने वाली पक्षियों की प्रजातीय विविधता का अध्ययन करना।
2. प्रवासी एवं स्थानीय पक्षियों के संरक्षण में आने वाली प्रमुख पर्यावरणीय चुनौतियों की पहचान करना।
3. आर्द्रभूमि, जल संसाधन और प्राकृतिक आवास के संरक्षण की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करना।
4. मानवीय गतिविधियों (जैसे पर्यटन, कृषि, अवैध शिकार) के पक्षी संरक्षण पर प्रभाव का मूल्यांकन करना।
5. जलवायु परिवर्तन एवं पर्यावरणीय असंतुलन के कारण पक्षियों के प्रवास पैटर्न में आए परिवर्तनों का अध्ययन करना।
6. पक्षी संरक्षण हेतु वर्तमान सरकारी नीतियों और प्रबंधन योजनाओं की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करना।
7. केवलादेव घना पक्षी विहार में पक्षियों के संरक्षण के लिए स्थानीय समुदाय की भूमिका एवं सहभागिता को समझना।
8. भविष्य में पक्षियों के संरक्षण हेतु टिकाऊ उपायों और नीतिगत सुझाव प्रस्तुत करना।

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध पत्र के लिए वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध पद्धति अपनाई गई है। प्राथमिक आँकडे प्राप्त करने हेतु केवलादेव घना पक्षी विहार में प्रत्यक्ष अवलोकन, स्थानीय पक्षी विशेषज्ञों एवं पर्यावरणविदों से साक्षात्कार, तथा संरक्षित क्षेत्र के आसपास रहने वाले समुदायों से प्रश्नावली के माध्यम से जानकारी संकलित की गई। इसके अतिरिक्त, द्वितीयक आँकडे विभिन्न सरकारी रिपोर्टों, शोध आलेखों, पुस्तकों, जर्नल्स तथा आई यू सी एन और डब्लू डब्लू एफ जैसी अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं की रिपोर्टों से एकत्रित किए गए। पक्षियों की प्रजातीय विविधता, प्रवास पैटर्न, और पर्यावरणीय चुनौतियों के अध्ययन हेतु सांख्यिकीय तकनीकों का प्रयोग किया गया। साथ ही, जीआईएस के माध्यम से अध्ययन क्षेत्र की भूमि उपयोग स्थिति एवं आर्द्रभूमि संसाधनों के परिवर्तनों का विश्लेषण किया गया। इस प्रकार बहुआयामी विधियों का प्रयोग कर शोध को वैज्ञानिक एवं विश्वसनीय रूप देने का प्रयास किया गया है।

आंकडों का विश्लेषण

केवलादेव घना पक्षी विहार में पक्षियों की प्रवासी एवं स्थानीय पक्षियों की संख्या का विश्लेषण

वर्ष	प्रवासी पक्षियों की संख्या	स्थानीय पक्षियों की संख्या	कुल पक्षी संख्या (अनुमानित)	प्रमुख चुनौतियां
2005	110	85	195	जल उपलब्धता संतुलित, पर्यटन नियंत्रित
2005	102	82	184	जल संकट प्रारंभ
2010	95	80	175	जलवायु परिवर्तन के संकेत, पर्यटन वृद्धि
2015	87	76	163	जल संकट गहरा, प्रवासी पक्षियों में कमी
2020	80	72	152	बढता शहरीकरण, जल की कमी
2024	76	70	146	जलवायु असंतुलन, अवैध गतिविधियाँ

विश्लेषण

1. प्रवासी पक्षियों में कमी वर्ष 2000 में जहाँ प्रवासी प्रजातियों की संख्या लगभग 110 थी, वहीं 2023 तक यह घटकर 76 रह गई है। इसका प्रमुख कारण साइबेरियन क्रेन जैसी कुछ दुर्लभ प्रजातियों का आना लगभग बंद हो जाना है।
2. स्थायी पक्षियों पर भी प्रभाव स्थानीय प्रजातियों की संख्या भी 85 से घटकर 70 रह गई है, जो आर्द्रभूमि में हो रहे पर्यावरणीय बदलावों का संकेत देती है।
3. कुल पक्षी संख्या में गिरावट 2000 में कुल पक्षी संख्या लगभग 195 थी, जो 2023 में घटकर 146 रह गई है।
4. चुनौतियाँ – जल संकट, अव्यवस्थित पर्यटन, जलवायु परिवर्तन और मानवीय हस्तक्षेप इस गिरावट के मुख्य कारण पाए गए।

5. सकारात्मक पहल – हाल के वर्षों में राजस्थान सरकार एवं स्थानीय समुदाय द्वारा जल प्रबंधन सुधार और पारिस्थितिकी संतुलन हेतु प्रयास किए जा रहे हैं, जिससे भविष्य में संरक्षण की संभावना है।

संरक्षण और प्रबंधन के मुद्दे

केवलादेव घाना को प्रारंभ में शाही राज परिवार के लिए शिकार एवं जंगली गायों को संरक्षण प्रदान करने हेतु रखा गया था परंतु वर्तमान में प्रमुख रूप से साइबेरियन सारस एवं अन्य पक्षी जैसे सांभर, चीतल, नीलगाय, जंगली सूअर, जंगली बिल्ली, मछली, स्वेट, ऊदबिलाव, अजगर, सर्प, हिरण, बारहसिंगा, बगुले, आईवीश, कुट्स, रेल्स आदि का संरक्षण प्रदान करना है एवं उसके आसपास संरक्षण कार्यक्रमों की सफलता के लिए तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष

केवलादेव घना पक्षी विहार भारत ही नहीं बल्कि संपूर्ण विश्व में पक्षियों के संरक्षण का एक महत्वपूर्ण केंद्र है, जहाँ स्थानीय और प्रवासी पक्षियों की असंख्य प्रजातियाँ पाई जाती हैं। इस शोध अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि बढते शहरीकरण, जल प्रबंधन की समस्याएँ, पर्यटन का दबाव, जलवायु परिवर्तन और मानवीय हस्तक्षेप इस विहार की पारिस्थितिकी पर गहरा प्रभाव डाल रहे हैं। जल संसाधनों में असंतुलन और आर्द्रभूमि के सिकुडने से प्रवासी पक्षियों की संख्या में लगातार कमी देखी जा रही है। साथ ही, अवैध शिकार और मानवीय गतिविधियाँ भी संरक्षण प्रयासों में बाधा उत्पन्न करती हैं।

यह अध्ययन इंगित करता है कि पक्षियों के दीर्घकालिक संरक्षण के लिए संतुलित जल प्रबंधन, पर्यावरणीय नीतियों का सख्त पालन, नियंत्रित पर्यटन, स्थानीय समुदाय की सक्रिय भागीदारी तथा आधुनिक संरक्षण तकनीकों (जैसे जीआईएस आधारित निगरानी और वैज्ञानिक प्रबंधन) का उपयोग आवश्यक है। यदि इन उपायों को समय रहते लागू किया जाए, तो केवलादेव घना पक्षी विहार न केवल जैव विविधता के संरक्षण में अपनी विशेष पहचान बनाए रखेगा, बल्कि वैश्विक स्तर पर पक्षी संरक्षण का एक सफल उदाहरण भी सिद्ध होगा।

संदर्भ सूचीरू

1. भारतीय वन्यजीव संस्थान (2018), भारत में आर्द्रभूमि एवं पक्षी संरक्षण, देहरादून।
2. डॉ सलीम अली ने अपने अध्ययन द फॉल आज ए स्पैरो में इसका वर्णन किया और उसे प्रवासी पक्षियों का स्वर्ग बताया है।
3. अनाय 1996 में केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान के लिए सहभागी प्रबंधन योजना नई दिल्ली डब्लू डब्लू ऑफ इंडिया
4. भटनागर, आर. के. वर्गिस और चक्रवर्ती ए. के. 1980 पक्षियों पर सूखे का प्रभाव भरतपुर पक्षी अभ्यारण से अवलोकन
5. विजयन अल. 1994 भारत के रामसर स्थल केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान राजस्थान नई दिल्ली डब्लू डब्लू ऑफ इंडिया
6. शर्मा, आर. (2019), राजस्थान में आर्द्रभूमि संरक्षण की चुनौतियाँ जयपुर राजस्थान विश्वविद्यालय प्रकाशन।
7. विश्व वन्यजीव कोष (2020), भारत में पक्षियों की प्रवासी प्रजातियाँ एवं संरक्षण उपाय, नई दिल्ली।
8. गुप्ता, एस. एवं सिंह, वी. (2017), केवलादेव धना राष्ट्रीय उद्यान्न एक पारिस्थितिकीय अध्ययन् भरतपुरः पर्यावरण प्रकाशन।
9. भारत सरकार, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (2021), भारत में राष्ट्रीय उद्यानों एवं पक्षी विहारों की स्थिति रिपोर्ट नई दिल्ली।
10. बर्ड लाइफ इंटरनेशनल (2020), महत्वपूर्ण पक्षी एवं जैव विविधता क्षेत्र
11. मीणा, पी. (2016), जलवायु परिवर्तन एवं प्रवासी पक्षियों पर प्रभाव केवलादेव घना का अध्ययन अजमेर एम.डी.एस. विश्वविद्यालय।